संशय और विनिश्चय

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय राजस्थान

संशय का अर्थ है– सन्देहपूर्ण स्थिति। किसी भी वस्तु को देखते हैं तो उसके स्वरूप निर्धारण में पहले संशय की स्थिति होती है। जब रात में रस्सी को देखते हैं तो उसमें सर्प का सन्देह होता है। प्रकाश की सहायता से जब ठीक से देखा जाता है तो यह स्पष्ट होता है कि वह सर्प नहीं रस्सी है। संशय विश्चिय की और ले जाता है। सामान्य दर्शन शुद्ध ज्ञान है। यदि संशय बना रहता है तो मन में दुविधा होती है। कहा भी गया है कि संशयात्मा विनश्यति अर्थात्– संशयात्मा नष्ट हो जाता है। पाश्चात्य दार्शनिक डेकार्ट ने संशय और विनिश्चय पर गम्भीरतापूर्वक चिन्तन किया है। उनका कहना था कि संशय से जिस सत्य की प्राप्ति होती है वह पूर्ण सत्य होता है। उसमें सन्देह की कोई गुंजाईश नहीं रहती। चिकित्साशास्त्र में जब कोई रोगी डाक्टर के पास जाता है तो डॉक्टर अपना संशय दूर करने के लिए अनेक प्रकार की जॉच करवाता है जब उसका संशय दूर हो जाता है तब रोगी को दवा देता है। यदि बिना जॉच कराये ही रोगी को दवा दे देता तो सम्भव है कि रोगी का उपचार ठीक न होता। अतः परीक्षण करने के बाद ही डॉक्टर रोगी को औषधि देता है। संशय के माध्यम से डाक्टर सत्य को पकड़ता है और जब उसे पूर्ण विश्वास हो जाता है और वह निश्चिन्त हो जाता है कि अमुख औषधि देने से रोगी ठीक होगा तभी वह रोगी को औषधि देता है। दर्शन में सन्देह प्रारम्भ बिन्दु है परिणाम नहीं। सन्देह से सत्य की प्राप्ति होती है। दार्शनिकों के लिए आवश्यक है कि वह किसी सिद्धान्त पर पहुंचने से पूर्व सही प्रकार की मान्यताओं पर विचार करें। कई बार हम जो ऑख से प्रत्यक्ष करते हैं वह प्रमाणिक नहीं होता। इन्द्रिय प्रत्यक्ष द्वारा प्राप्त ज्ञान पर विश्वास करना अंधविश्वास है। ग्रीक दार्शनिक प्लेटो ने कहा था कि ज्ञान का उद्‌गम आश्चर्य है। मध्यचुगीन विचारकों ने ज्ञान का उद्‌गम विश्वास को माना। आधुनिक युग के दार्शनिक डेकार्ट ने ज्ञान का उद्‌गम सन्देह को माना। डेकार्ट के पूर्व में अनेक दार्शनिक हुए किन्तु वे सन्देह के महत्त्व को नहीं समझ सकें। उन्होंने सन्देह को ही अपना लक्ष्य बना दिया।

डेकार्ट ने दार्शनिक पद्धति के रूप में सन्देह को स्वीकार किया। डेकार्ट का विचार है कि विश्वास के लिए ज्ञान की आवश्यकता है। इसलिए डेकार्ट के मत में ज्ञान का उद्‌गम सन्देह है। सन्देह की कसौटी पर कसे बिना ज्ञान का स्वरूप निखरता नहीं, विश्वास की नींवें भी सुदृढ़ नहीं होती।

ज्ञान में प्रामाणिकता और निश्चयात्मकता के लिए सन्देह की नितान्त आवश्यकता है। उदाहरण के लिए डेकार्ट कहता है कि मैं मनुष्य हूँ तथा मनुष्य होने के कारण सोता हूँ तथा स्वप्न लेता हूँ। स्वप्न में मैं आग के पास कपड़े पहलकर बैठा हूँ जाग्रता आवस्था में यह असत्य सिद्ध होता है। स्वप्नावस्था और जागृतावस्था में अन्तर कैसे किया जाये? क्या केवल स्वप्नावस्था को इसलिए भ्रम कह दिया जाये कि वह जागृतावस्था से भिन्न है। क्यों न जागृतावस्था को इसलिए भ्रम कहा जाये कि वह स्वपन्न से भिन्न हैं। इन दोनों में यथार्थ जगत कौनसा है? यह सम्भव है कि जागृतावस्था में हम जो कुछ भी देखते हैं वह धोखा और मायाजाल है। डेकार्ट प्रत्येक वस्तु में सन्देह प्रकट करता है। डेकार्ट कहता है कि इसलिए मैं मानता हूँ कि जिन वस्तुओं को मैं देखता हूँ वे सब असत्य है। मेरा विचार है कि मेरे पास कोई भी इन्द्रियां नहीं है। शरीर, आकार, विस्तार, गति मेरे मस्तिष्की की कल्पना के अतिरिक्त कुछी भी नहीं है। अन्त में प्रश्न उठता है कि सत्य किसे माना जाये? शायद केवल यह कि जगत में कुछ भी नहीं है। डेकार्ट शरीर, संसार, आन्तरिक और ब्राह्य सभी वस्तुओं पर सन्देह प्रकट करता है। उसका विश्वास है सन्देह के माध्यम से निस्सन्देह सत्य की उपलब्धि सम्भव है। सत्य का स्वरूप सन्देह के बिना नहीं जाना जा सकता। सन्देह ही सत्य का मार्ग है। संशय ही ज्ञान का स्रोत है। सन्देह प्रारम्भ बिन्दु है, अन्तिम बिन्दु नहीं। डेकार्ट सन्देहवादी नहीं था। सन्देहवादी के लिए सन्देह ही साध्य और साधन दोनों है। वह निस्सदेह सत्य को प्राप्त नहीं कर पाता। डेकार्ट के अनुसार सत्य स्वतः सिद्ध और निश्चयात्मक है। डेकार्ट को सत्य की सार्वभौमिकता, सहजता और निश्चयात्मकता मान्य है। इस सत्य की प्राप्ति सन्देह विधि द्वारा की जा सकती है। जो सन्देह को साधन रूप में मानता है वह सत्य को प्राप्त कर लेता है। जो सन्देह को साध्य मान लेता है उसका विनाश निश्चित है। सन्देह अंधविश्वास और रूढ़िवादी को मिटाने के लिए है, सत्य को मिटाने के लिए नहीं। डेकार्ट के भाव को संशयेन

विजानाति संशयात्मा विनश्यति अर्थात– संशय से सत्य को जाना जा सकता है। किन्तु संशयात्मा का विनाश हो जाता है। यह पद्धति सत्य को प्राप्त करने की एक नवीन प्रणाली है। सन्देह अथवा विचार तभी होता है जब कोई सन्देह करने वाला अथवा विचारक हो। सन्देह का तात्पर्य है चिन्तन करना। इससे निश्चित होता है कि कोई चिन्तन करने वाला अवश्य है– अर्थात् मैं चिन्तन करता हूँ इसलिए मैं हूँ। इस प्रकार सन्देह की विधि से प्रारम्भ होकर आत्मा के अस्तित्व की प्राप्ति हुई । आत्मा ही वह निश्चित तथ्य है जिसका अस्तित्व त्रैकालिक है। प्रथमदृष्टया यदि किसी वस्तु के अस्तित्व को स्वीकार कर लिया जाता है तो उसमें त्रुटि की गुंजाईश बनी रहती है। यदि सन्देह से प्रारम्भ करके सत्य को प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है तो निश्चित सत्य की प्राप्ति होती है।